New
2-2-2012

विशद
श्री अरहनाथ विधान

रचयिता

प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति – **विशद श्री अरहनाथ विधान**

कृतिकार – **प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

संस्करण – **प्रथम -2012 ● प्रतियाँ :1000**

संकलन – **मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज**

सहयोग – **ब्र. सुखनन्दनजी भैया**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी (9829076085) आस्था दीदी9660996425, सपना दीदी**

संयोजन – **किरण, आरती दीदी ● मो. 9829127533**

प्राप्ति स्थल – **1 जैन सरोवर समिति, निर्मलकुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट मनिहारों का रास्ता, जयपुर फोन : 0141-2319907 (घर) मो.: 9414812008**

2. श्री राजेशकुमार जैन ठेकेदार ए-107, बुध विहार, अलवर मो.: 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र C/o श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा) प्रधान-09416882301

मूल्य – **31/- रु. मात्र**

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री संदीपकुमार जी जैन

रावतभाटा, कोटा (राज.) मो. 9413356973

मुद्रक : **राजू ग्राफिक आर्ट (संदीप शाह),** जयपुर ● फोन : 2313339, मो.: 9829050791

New
2-2-2012

भक्ति से मुक्ति

नाथ ! तोरी पूजा को फल पायो, मेरे यों निश्चय अब आयो–2
मेंढ़क कमल–पाँखड़ी मुख ले, जिनदर्शन को धायो,
श्रेणिक गज के पग–तल मूवो, तुरंत स्वर्गपद पायो। नाथ...

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने श्रावक के आवश्यक कर्त्तव्यों में प्रथम आवश्यक कर्त्तव्य देवपूजन को माना है। जिनेन्द्र देव की जल, चंदन, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, फल, अर्घ्य द्वारा सच्चे भाव से पूजन करने पर ही मुक्तिरूपी फल की प्राप्ति होती है। वर्तमान में प्राणी यत्र–तत्र कुगुरु, कुदेव, कुशास्त्र की सेवा करके अपने कष्ट, दुःख से छुटकारा पाना चाहते हैं। जैन होकर के भी जिन्हें जिनेन्द्र देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धान नहीं है ऐसे प्राणी ही अपना संसार बढ़ा रहे हैं।

उड़ान भर हवाओं में, या लगा गोता समंदर में।
तुझको उतना ही मिलेगा, जितना लिखा मुकद्दर में।।

बसन्त उन बीजों, वृक्षों के लिये आता है जो बीज उगना चाहता है, जो अंकुरित हो चुके हैं, उन बीजों को नव जीवन देने के लिये आचार्य गुरुवर **श्री विशदसागरजी महाराज** हमारे जीवन में बसन्त की तरह आये हैं। जो सोये हैं उन्हें जगाने के लिये, जो बैठे हैं उन्हें उठाने के लिये, जो खड़े हैं उन्हें चलाने के लिये एवं जो चल रहे हैं उन्हें मुक्ति मंजिल तक पहुँचाने के लिये। परम पूज्य क्षमामूर्ति, तीर्थ जीर्णोद्धारक, साहित्य रत्नाकर, चँवलेश्वर के छोटे बाबा आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी महाराज ने स्व–लेखनी से सरल भाषा में अनेक विधान लिखे हैं उसी क्रम में है **'श्री अरहनाथ विधान'**।

आचार्य श्री ने अपना बहुमूल्य समय निकालकर साहित्य सर्जन किया। जो नर से नारायण, पशु से परमेश्वर बनने हेतु सर्वोपयोगी सिद्ध होगा। अंत में वीर प्रभु से यही प्रार्थना करती हूँ कि पूज्य आचार्यश्री को आरोग्य लाभ हो वे युग–युग तक धर्म की अभूतपूर्व प्रभावना करते रहें। पूज्य आचार्यश्री के चरणों में मन–वचन–काय पूर्वक कोटि–कोटि नमन्।

पता नहीं कब मौत का पैगाम आ जाए।
कब जिन्दगी की आखिरी शाम आ जाए।।
मैं तो ऐसा मौका तलाश करती हूँ कि,
मेरी जिन्दगी भी कभी गुरुवर के काम आ जाए।।

– ब्र. आरती दीदी (संघस्थ आचार्यश्री विशदसागर)

मंगलाचरण

दोहा– परमेष्ठी की वन्दना, करते योग सम्हार।
पंचम गति का दीजिए, हमको शुभ उपहार।।

अर्हंत सिद्धाचार्य उपाध्याय, सर्व साधु जग में पावन।
जैन धर्म जिन चैत्य जिनालय, जैनागम को शत् वन्दन।।
इनकी भक्ति जो भी करता, मंगलमय उनका जीवन।
इनके प्रति श्रद्धा करने से, हो जाए सम्यक् दर्शन।।1।।

चत्तारि मंगल हैं जग में, अरहंत सिद्ध साहु मंगल।
रत्नत्रय से सहित धर्म शुभ, उत्तम क्षमा आदि मंगल।।
चत्तारि उत्तम हैं जग में, अरहंत सिद्ध साहू उत्तम।
राग रहित शुभ वीतराग युत, धर्म रहा जग में उत्तम।।2।।

चत्तारि है शरण जगत में, अरहंत सिद्ध साहू शरणं।
देव शास्त्र गुरु शरण श्रेष्ठ हैं, जैन धर्म जग में शरणं।।
मंत्र रहा यह नमस्कार शुभ, सब पापों का नाशक है।
सभी मंगलों में मंगल यह, प्रथम जगत का शासक है।।3।।

महामंत्र है सार लोक में, पापों का शत्रु अनुपम।
विषहर संसारोच्छेदक शुभ, नाशक कर्म रहा मंत्रम्।।
सिद्धि प्रदायक महामंत्र है, शिव सुखकर्त्ता रहा महान।
महामंत्र को जपने वाला, पा जाता है केवलज्ञान।।4।।

अन्य शरण कोई नहीं जगत में, परमेष्ठी हैं एक शरण।
करुणाकारी हे करुणानिधि !, हृदय बसें तव दोय चरण।।
परमेष्ठी शुभ पाँच हमारे, उनकी हम जयकर करें।
परम शांति हो जाय जगत में, जग के सारे कष्ट हरें।।5।।

श्री नवदेवता पूजा

स्थापना

हे लोक पूज्य अरिहंत नमन् !, हे कर्म विनाशक सिद्ध नमन् ! ।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु उपाध्याय को शत् वन्दन।।
हे सर्व साधु है तुम्हें नमन् !, हे जिनवाणी माँ तुम्हें नमन् !।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन।।
नव देव जगत् में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से भव संताप गलें।
हे नाथ ! आपके चरणों में श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए ।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए ।।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो:कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें ।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8 ।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हंत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों के, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता छन्द

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा करोति।

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

***जाप्यह्न* ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

दोहा– **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटी से, पूजों हो भाई। जि...

पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई ।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई।
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई।। जि...

दोहा– **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्–शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा– **भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।**
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अरहनाथ स्तवन

दोहा– **नेता मुक्ति मार्ग के, गुण रत्नों की खान।**
नाथ आपके नाम का, करते हम गुणगान।।

हे अरहनाथ सुख के सागर, हमने तव दर्शन पाया है।
है अल्प बुद्धि का सेवक यह, प्रभु तव गुण गाने आया है।।
तुम महाबली कर्मारि जयी, तुम तो प्रभु करुणा सागर हो।
तुम कामजयी शिव रमाकंत, तुम धर्म रत्न रत्नाकर हो।।1।।

तुम कोटि सूर्य ज्योति भूषण, तुममें यह लोक समाया है।
तुम भाग्य विधाता दीनों के, तुमने प्रभु शिवसुख पाया है।।
तुमने विषयों को त्यागा है, जग को सन्मार्ग दिखाया है।
जो भूले भटके राही हैं, उनको शिव मार्ग बताया है।।2।।

तुमरे चरणों की रज पाने, इस जग के प्राणी व्याकुल हैं।
तव दर्शन पाने नेत्र मेरे, हे भगवन् ! भारी आकुल हैं।।
कटते हैं अशुभ कर्म सारे, तव दर्शन करने से स्वामी !।
तव वाणी जग कल्याणी है, हे त्रिभुवन ! के अन्तर्यामी।।3।।

तुम जग को साता देते हो, जग में सन्मार्ग प्रदाता हो।
तुम मुक्ति पद के नायक हो, भक्तों के भाग्य विधाता हो।।
हम महिमा सुनकर हे भगवन् !, अब चरण शरण में आए हैं।
तव दर्शन करके नाथ आज, मन में अतिशय हर्षाए हैं।।4।।

हम भक्त आपके चरणों में, यह आश लगाए रहते हैं।
हे प्रभु आपके गुण अनन्त, जिनवाणी में यह कहते हैं।।
जिस पद को तुमने पाया है, वह चाह रहे हैं हम स्वामी।
अब राह दिखादो हमें विशद, बन जाओ मेरे पथगामी।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

New
2-2-2012

श्री अरहनाथ जिन पूजन

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द – भुजंग प्रयात)

प्रभो ! नीर निर्मल ये प्रासुक कराके।
चढ़ाने को लाये हैं कलशा भरके।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्मजरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! गंध केसर घिसा के हम लाए,
भवताप के नाश हेतु हम आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चदनं निर्वपामीति स्वाहा।

परम थाल तन्दुल के हमने भराए,
विशद भाव अक्षय सुपद के बनाए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सलौने सुगन्धित खिले फूल लाए।
प्रभो ! काम बाधा नशाने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य हमने सरस ये बनाए।
क्षुधा रोग के नाश हेतु चढ़ाए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! दीप घृत के मनोहर जलाए।
महामोह तम नाश करने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! धूप हमने दशांगी जलाई।
सुधी नाश कर्मों की मन में जगाई।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो ! श्रेष्ठ ताजे सरस फल मँगाए।
महामोक्ष फल प्राप्त करने को आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

New
2-2-2012

मिलाके सभी द्रव्य का अर्घ्य लाए।
परम श्रेष्ठ शाश्वत सुपद पाने आए।।
प्रभु आपके हम गुणगान गाते।
अरहनाथ तव पाद में सर झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा

फाल्गुन शुक्ला तीज को, अरहनाथ भगवान।
मात मित्रसेना वती, उर अवतारे आन।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य यह, चढ़ा रहे हम नाथ।
भक्ति का फल प्राप्त हो, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्ताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छन्द)

अगहन शुक्ला चतुर्दशी को, भूप सुदर्शन के दरबार।
हस्तिनागपुर अरहनाथ जी, जन्म लिए हैं मंगलकार।।
चरण कमल की अर्चा करते, अष्ट द्रव्य से अतिशयकार।
कल्याणक हो हमें प्राप्त शुभ, चरणों वन्दन बारम्बार।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चौपाई)

अगहन सुदी दशमी जिनराज, धारे प्रभु संयम का ताज।
भेष दिगम्बर धारे नाथ, जिनके चरण झुकाऊँ माथ।।
तीन लोक में सर्व महान्, प्रभु ने पाया तप कल्याण।
पाएँ हम भव से विश्राम, पद में करते विशद प्रणाम।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(हरिगीता छन्द)

द्वादशी कार्तिक सुदी की, कर्म नाशे चार हैं।
जिन अरह तीर्थेश ज्ञानी, हुए मंगलकार हैं।।
जिन प्रभु की वंदना को, हम शरण में आए हैं।
अर्घ्य यह प्रासुक बनाकर, हम चढ़ाने लाए हैं।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण की तिथि अमावस, गिरि सम्मेदशिखर शुभ धाम।
अरहनाथ जिन मोक्ष पधारे, तिनके चरणों करूँ प्रणाम।।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाकर, बने प्रभु अंतर्यामी।
हमको मुक्ति पथ दर्शाओ, बनो प्रभु मम् पथगामी।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा – **जयमाला गाते परम, भाव सहित हे नाथ!**
तव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।

(छन्द टप्पा)

काम देव चक्री पद पाया, बने मोक्ष गामी।
तीर्थंकर की पदवी पाए, कुन्थुनाथ स्वामी।।
जिनेश्वर हैं अन्तर्यामी।
तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
फाल्गुन कृष्ण तीज अवतारे, हस्तिनापुर स्वामी।
मात सुमित्रा के उर आये, अपराजित गामी।।

जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
मगसिर शुक्ला चौदस तिथि को, जन्म लिए स्वामी।
इन्द्रों ने अभिषेक कराया, जिनवर का नामी।।
जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर है ... ।।
कार्तिक शुक्ल द्वादशी तिथि को, बने विशद ज्ञानी।
समवशरण में कमलासन पर, अधर हुए स्वामी।।
जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
चैत्र कृष्ण की तिथि अमावस, बने मोक्ष गामी।
अक्षय अनुपम सुख पाये तब, शिवपुर के स्वामी।।
जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ति, पाये जिन स्वामी।
सिद्ध शुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्ध बने नामी।।
जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पावें स्वामी।
रत्नत्रय को पाकर हम भी, बने मोक्ष गामी।।
जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।
संयम त्याग तपस्या करना, कठिन रहा स्वामी।
फिर भी हमने लक्ष्य बनाया, बन के अनुगामी।।
जिनेश्वर ... ।

तीन योग से वन्दन करते, हे त्रिभुवन नामी–जिनेश्वर ... ।।

(छन्द घत्तानन्द)

जय–जय हितकारी, संयमधारी, गुण अनन्त के अधिकारी।
तुम हो अविकारी, ज्ञान पुजारी, सिद्ध सनातन अविकारी।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – अरहनाथ के साथ में, हुए जीव कई सिद्ध।
सिद्ध दशा हमको मिले, जो है जगत् प्रसिद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

दोहा– सद्दर्शन के मूल हैं, मैत्री आदि भाव।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने निज स्वभाव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सम्यक्त्व की चार भावनाएँ

मैत्री भाव जगत में मेरा, सब जीवों से नित्य रहे।
दरश विशुद्धि वाला है वह, जिनके ऐसे भाव रहे।।
मैत्री भाव रहे जिसके वह, जग में मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है।।1।।

ॐ ह्रीं मैत्री भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणीजनों को देख हृदय में, मम प्रमोद का भाव जगे।
उनकी सेवा करने में ही, मेरा तन मन ध्यान लगे।।
जो प्रमोद का भाव धरे वह, जग में मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है।।2।।

ॐ ह्रीं प्रमोद भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीन दुःखी जीवों पर मेरे, उर से करुणा स्रोत बहे।
हो जावे कल्याण सभी का, शांति से हर जीव रहे।।
धारे करुणा भाव हृदय में, वह जग मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है।।3।।

ॐ ह्रीं करुणा भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्जन क्रूर कुमार्ग रतों पर, क्षोभ नहीं हमको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर, ऐसा जीवन बन जावे।।
जो माध्यस्थ भाव रखता वह, जग में मंगलकारी है।
ऐसा भाव बनाने वाला, जैन धर्म का धारी है।।4।।

ॐ ह्रीं माध्यस्थ भावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन के कारण हैं, मैत्री आदि भाव विशेष।
रत्नत्रय को पाने वाले, बनते अर्हत् प्रभु जिनेश।।
उनके गुण की माला को सब, गाते हैं इस जग के जीव।
पूजा भक्ति अर्चा करके, प्राप्त करें वह पुण्य अतीव।।5।।

ॐ ह्रीं चतुःभावना संयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा- आठ अंग सम्यक्त्व के, पाएँ हम हे नाथ ।
पुष्पाञ्जलि करके विशद, चरण झुकाते माथ।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

आठ अंग (छन्द जोगीरासा)

देव शास्त्र गुरु जैन धर्म में, शंका मन में आवे।
दोष करें सम्यक् दर्शन में, भव-भव में भटकावे।।
जो निशंक जिन धर्म वचन में, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।1।।

ॐ ह्रीं निशंकित अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मवशी जो अंत सहित है, बीज पाप का गाया।
भव सुख की चाहत करना ही, कांक्षा दोष कहाया।।
यह सुख वांछा तजने वाले, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।2।।

ॐ ह्रीं निष्कांक्षित अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है स्वभाव से देह अपावन, रत्नत्रय से है पावन।
त्याग जुगुप्सा गुण में प्रीति, मुनि तन है मन भावन।।
ग्लानि को तजने वाले ही, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।3।।

ॐ ह्रीं निर्विचिकित्सा अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुपथ पंथ पंथी की स्तुति, और प्रशंसा करना।
भव दुःख का कारण है भाई, दर्शन दोष समझना।।
करें मूढ़ की नहीं प्रशंसा, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।4।।

ॐ ह्रीं अमूढ़ दृष्टि अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शुद्ध है मोक्ष का मारग, मोही दोष लगावे।
धर्म की निन्दा होय जहाँ यह, दर्शन दोष कहावे।।
अवगुण ढाकें दोषी जन के, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।5।।

ॐ ह्रीं उपगूहन अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक् दर्शन या चारित्र से, चलित कोई हो जावे।
अज्ञानी भव भ्रमण करें वह, दर्शन दोष लगावे।।
धर्मभाव से उनके मन में, पुनः धर्म उपजावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।6।।

ॐ ह्रीं स्थितिकरण अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म और साधर्मीजन में, प्रीति नहीं जो धरते।
सम्यक् दर्शन में वह प्राणी, दोष अनेकों करते।।
वात्सल्य का भाव धरें तो, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।7।।

ॐ ह्रीं वात्सल्य अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्या अरु अज्ञान तिमिर जो, फैला सारे जग में।
समकित में वह दोष लगावें, चले न मुक्ति मग में।।
जैन धर्म को करें प्रकाशित, सद्दृष्टि कहलावें।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, सिद्ध शिला को जावें।।8।।

ॐ ह्रीं धर्मप्रभावना अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अंग सम्यक् दर्शन के, जो भी प्राणी पाते हैं।
अन्तर्मन में वह सब प्राणी, भेद ज्ञान प्रगटाते हैं।।
मोक्ष मार्ग के राही बनते, पा लेते हैं केवल ज्ञान।
सम्यक् चारित धर अनुक्रम से, पा जाते हैं पद निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं अष्ट अंग सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलयः

दोहा– सोलह कारण भावना, भाते हैं जो जीव।
तीर्थंकर बनते स्वयं, पाते पुण्य अतीव।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सोलह भावना *(चाल छंद)*

मन में श्रद्धान जगाएँ, वे दर्श विशुद्धि पाएँ।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शन विशुद्धि भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो विनय भाव दर्शाते, वे विनय सम्पन्नता पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।2।।

ॐ ह्रीं विनय सम्पन्नता भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्दोष व्रतों के धारी, हो जाते हैं अविकारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।3।।

ॐ ह्रीं शीलव्रत भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, वह धर्म भाव संयोगी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।4।।

ॐ ह्रीं अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव से विरक्त हो जाते, संवेग भाव उपजाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।5।।

ॐ ह्रीं संवेग भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है त्याग भावना भाई, भवि जीवों को सुखदायी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।6।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्त्याग भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सुतप भावना भाते, वे कर्म निर्जरा पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तितस्तप भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि साधु समाधि धारे, समता निज हृदय सम्हारे।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।8।।

ॐ ह्रीं साधु-समाधि भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो साधु के उपकारी, हैं वैय्यावृत्ति धारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।9।।

ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्हत् के गुण गाए, अर्हत भक्ति कहलाए।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण आचार्यों के गाते, वे आचार्य भक्ति पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।11।।

ॐ ह्रीं आचार्य भक्ति भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण उपाध्याय के गावें, वे बहुश्रुत भक्ति पाते।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।12।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुत भक्ति भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जिनवाणी को ध्याते, वे भक्ति हृदय जगावें।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।13।।

ॐ ह्रीं प्रवचन भक्ति भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जन आवश्यक पालें, शुभ अपने भाव सम्हालें।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।14।।

ॐ ह्रीं आवश्यकापरिहार्य भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मार्ग प्रभावना धारी, होते जग मंगलकारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।15।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावना भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वात्सल्य के धारी, जन-जन के हों उपकारी।
जो भव्य भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवात्सल्य भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोलह कारण भावना, भाय भक्ति के साथ।
भव सिन्धु से पार हो, बने मुक्ति के नाथ।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्यादि षोडश भावना सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

(बत्तीस देव इन्द्र पूजा)

दोहा- बत्तीस इन्द्र प्रभु की पूजा, भाव सहित करते हैं आन।
पुष्पाञ्जलि से पूजा करते, चरणों में करते गुणगान।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।

आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र-अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

असुर इन्द्र परिवार के साथ, श्री जिन चरण झुकाए माथ।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।1।।

ॐ ह्रीं असुरकुमारेण परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाग इन्द्र लावे परिवार, भक्ति करने अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।2।।

ॐ ह्रीं नागेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतेन्द्र लावे परिवार, अर्चा करने अतिशयकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।3।।

ॐ ह्रीं विद्युतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपर्णेन्द्र लावे परिवार, जिन गुणगावे मंगलकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।4।।

ॐ ह्रीं सुपर्णेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नि इन्द्र लावे परिवार, अर्घ्य बनाए अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।5।।

ॐ ह्रीं अग्नि इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मारुतेन्द्र लावे परिवार, जिन अर्चा को विस्मयकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।6।।

ॐ ह्रीं मारुतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्तनितेन्द्र लावे परिवार, भक्ति करने मंगलकार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।7।।

ॐ ह्रीं स्तनितेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सागरेन्द्र परिवार समेत, आता है भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।8।।

ॐ ह्रीं सागरेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वीप इन्द्र परिवार समेत, जिन चरणों भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।9।।

ॐ ह्रीं द्वीप इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिग्सुरेन्द्र भक्ति के हेत, अर्चा करता भाव समेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।10।।

ॐ ह्रीं दिक्सुरेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किन्नरेन्द्र लावे परिवार, ढ़ोक लगावे बारम्बार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।11।।

ॐ ह्रीं किन्नरेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किम्पुरुषेन्द्र लावे परिवार, पूजा करने अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।12।।

ॐ ह्रीं किम्पुरुषेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महोरगेन्द्र परिवार समेत, आवे जिन भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।13।।

ॐ ह्रीं महोरगेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गन्धर्व इन्द्र भक्ति के साथ, आकर विशद झुकाए माथ।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।14।।

ॐ ह्रीं गन्धर्व इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्ष इन्द्र लावे परिवार, जिन पूजा को बारम्बार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।15।।

ॐ ह्रीं यक्ष इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राक्षसेन्द्र परिवार समेत, आता है भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।16।।

ॐ ह्रीं राक्षस इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत इन्द्र लावे परिवार, जिन चरणों में अपरम्पार।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।17।।

ॐ ह्रीं भूत इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पिशाचेन्द्र परिवार समेत, जिन चरणों भक्ति के हेत।
पूजा करता सह सम्मान, अरहनाथ के पद में आन।।18।।

ॐ ह्रीं पिशाचेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(शम्भू छंद)

चन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के श्रीचरणों में, सादर शीश झुकाता है।।19।।

ॐ ह्रीं चन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रवि इन्द्र परिवार सहित मिल, जिन पूजा को आता है।
अरहनाथ की पूजा करके, सादर शीश झुकाता है।।20।।

ॐ ह्रीं रवि इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सौधर्मेन्द्र सहित भक्ति से, जिन पूजा को आता है।
अरहनाथ की पूजा को, परिवार साथ में लाता है।।21।।

ॐ ह्रीं सौधर्म इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईशानेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, उत्तम अर्घ्य चढ़ाता है।।22।।

ॐ ह्रीं ईशान इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सानत इन्द्र सहित भक्ति से, अर्घ्य चढ़ाने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।23।।

ॐ ह्रीं सानतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।24।।

ॐ ह्रीं माहेन्द्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित भक्ति से, ब्रह्म इन्द्र भी आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।25।।

ॐ ह्रीं ब्रह्म इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लान्तवेन्द्र परिवार सहित, जिन पूजा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।26।।

ॐ ह्रीं लान्तवेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्र इन्द्र आता जिन चरणों, निज परिवार को लाता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।27।।

ॐ ह्रीं शुक्र इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शतारेन्द्र परिवार सहित, जिन अर्चा करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।28।।

ॐ ह्रीं शतारेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परिवार सहित भक्ति से, आनतेन्द्र भी आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।29।।

ॐ ह्रीं आनतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राणतेन्द्र परिवार सहित, जिन भक्ति करने आता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।30।।

ॐ ह्रीं प्राणतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आरणेन्द्र जिन भक्ति करने, अर्घ्य बनाके लाता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।31।।

ॐ ह्रीं आरणेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अच्युतेन्द्र प्रभु भक्ति करने, निज परिवार भी लाता है।
अरहनाथ के पद पंकज में, सादर शीश झुकाता है।।32।।

ॐ ह्रीं अच्युतेन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवनालय व्यन्तरवासी अरु, इन्द्र स्वर्ग से आते हैं।
झूम झूमकर नृत्य गान कर, पूजन श्रेष्ठ रचाते हैं।।

अरहनाथ के चरण कमल में, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
विशद भाव से श्री चरणों में, अपना शीश झुकाते हैं।।33।।

ॐ ह्रीं द्वात्रिंशद इन्द्र परिवार सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चम वलयः

दोहा– दश धर्मों को प्राप्त जिन, गुण पाए छियालीस।
आठ मूल गुण सिद्ध के, तिन्हें झुकाएँ शीश।।

(मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(स्थापना)

अरहनाथ जिन त्रय पदधारी, संयम धार बने अनगारी।
कामदेव चक्री कहलाए, तीर्थंकर की पदवी पाए।।
आप हुए त्रिभुवन के स्वामी, केवल ज्ञानी अन्तर्यामी।
हृदय कमल में मेरे आओ, मोक्ष महल का मार्ग दिखाओ।।
चरण प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी।
विशद भावना हम यह भाते, तव चरणों में शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र–अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानन।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितौ भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

जो भी क्रोध कषाय नशाए, उत्तम क्षमा धर्म वह पाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मान हृदय से जिसके जाए, मार्दव धर्म वही प्रगटाए।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मायाचार हटाए प्राणी, आर्जव पावे वह सद्ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ त्याग कर हो अविकारी, शौच धर्म पाए मनहारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असद् कटुक शब्दों को त्यागे, सत्य धर्म में प्राणी लागे।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयावान इन्द्रिय जय धारी, संयम पावे वह अनगारी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छा रोध करे जो भाई, उत्तम तप पावे सुखदाई।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग त्याग कर बनता दानी, उत्तम त्याग धरे वह ज्ञानी।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन में किंचित् राग न लावें, धर्माकिञ्चन प्राणी पावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिञ्चन धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज से जिन का ध्यान लगावें, उत्तम ब्रह्मचारी कहलावें।
धर्म भावना धारो प्राणी, जो जीवों की है कल्याणी।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्म सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्म के अतिशय (नरेन्द्र छंद)

प्रभु के जन्म समय से अतिशय, शुभ तन में दश सोहे।
स्वेद रहित तन जानो अनुपम, जन–जन का मन मोहे।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।11।।

ॐ ह्रीं स्वेदरहित सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गर्भ से जन्मे हैं माता के, फिर भी निर्मल गाये।
मल-मूत्रादि रहित देह प्रभु, अतिशय पावन पाये।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।12।।

ॐ ह्रीं नीहाररहित सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का रुधिर श्वेत है अनुपम, अतिशय पावन गाया।
रुधिर लाल नहिं यह शुभ अतिशय, जन्म समय का पाया।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।13।।

ॐ ह्रीं श्वेत रुधिर सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन सुडोल आकार मनोहर, समचतुरस्र बताया।
जिस अवयव का माप है जितना, उतना ही मन भाया।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।14।।

ॐ ह्रीं समचतुष्क संस्थान सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्र वृषभ नाराच संहनन, जिनवर तन में पाते।
गणधरादि नित हर्षित मन से, प्रभु का ध्यान लगाते।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।15।।

ॐ ह्रीं वज्रवृषभनाराच संहनन सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव का रूप लजावे, जिन प्रभु तन के आगे।
अतिशय रूप मनोहर प्रभु का, देखत में शुभ लागे।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।16।।

ॐ ह्रीं अतिशयरूप सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परम सुगंधित तन है प्रभु का, अनुपम महिमाकारी।
अन्य सुरभि नहिं है जग में, प्रभु तन सम मनहारी।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।17।।

ॐ ह्रीं सुगंधित तन सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार आठ शुभ लक्षण, प्रभु के तन में सोहे।
अद्भुत महिमाशाली जिनवर, त्रिभुवन का मन मोहे।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।18।।

ॐ ह्रीं सहस्राष्टलक्षण सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुलना रहित अतुल बल प्रभु के, अतिशय तन में गाया।
इन्द्र चक्रवर्ती से अद्भुत, शक्ति मय बतलाया।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।19।।

ॐ ह्रीं अतुल्यबल सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित-मित-प्रिय वचन अमृत सम, प्रभु के होते भाई।
त्रिभुवन के प्राणी सुनते हैं, मंत्र मुग्ध सुखदायी।।
सुर नर असुर इन्द्र विद्याधर, जिन प्रभु के गुण गावें।
भक्ति भाव से जो भी पूजें, वह अनुपम सुख पावें।।20।।

ॐ ह्रीं प्रियहितवचन सहजातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10 केवलज्ञान के अतिशय (रोला छंद)

चार-चार सौ कोष, चारों दिश में गाया।
होय सुभिक्ष सुकाल, यह अतिशय प्रभु पाया।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।21।।

ॐ ह्रीं गव्यूति शत् चतुष्टय सुभिक्षत्व घातिक्षय जातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाते केवल ज्ञान, नभ में गमन करे हैं।
देव रचावें पुष्प, तिन पर चरण धरे हैं।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।22।।

ॐ ह्रीं आकाशगमन घातिक्षय जातिशयधारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ गमन प्रभु होय, प्राणी वध न होवे।
दया सिन्धु जिनदेव, जग की जड़ता खोवे।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।23।।

ॐ ह्रीं अदयाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार विहीन, रहते हैं जिन स्वामी।
कुछ कम कोटि पूर्व, रहें अन्तर्यामी।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।24।।

ॐ ह्रीं कवलाहार घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो उपसर्ग अभाव, अतिशय यह शुभकारी।
सुर नर पशु अजीव, कृत उपसर्ग निवारी।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।25।।

ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में देव, चउ दिश दर्शन देवें।
मुख पूरब में होय, सबका दुःख हर लेवें।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।26।।

ॐ ह्रीं चतुर्मुखदर्श घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विद्या के एक, ईश्वर आप कहाए।
तुम्हें पूजते भव्य, ज्ञान कला प्रगटाए।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।27।।

ॐ ह्रीं सर्व विद्येश्वरत्व घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक देह, पुद्गलमय प्रभु पाए।
फिर भी छाया हीन, अतिशय यह प्रगटाए।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।28।।

ॐ ह्रीं छायारहित घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पलक झपकती नाहिं, न ही हो टिमकारी।
सौम्य दृष्टि नाशाग्र, लगती अतिशय प्यारी।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।29।।

ॐ ह्रीं अक्षस्पंदरहित घातिक्षयजातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं बढ़ें नख केश, केवल ज्ञानी होते।
दिव्य शरीर विशेष, मन का कल्मश खोते।।
यह अतिशय हे नाथ !, जन-जन के मन भावे।
तव चरणाम्बुज ध्याय, प्राणी शिव सुख पावे।।30।।

ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व घातिक्षय जातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

14 देवकृत अतिशय (छन्द जोगीरासा)

भाषा है सर्वार्धमागधी, जिन अतिशय शुभकारी।
भव-भव के दुःख हरने वाली, भव्यों को सुखकारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।31।।

ॐ ह्रीं सर्वार्धमागधी भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

बैर भाव सब तज देते हैं, जाति विरोधी प्राणी।
मैत्री भाव बढ़े आपस में, जिन मुद्रा कल्याणी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।32।।

ॐ ह्रीं सर्वमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सब ऋतु के फल फूल खिलें, एक साथ मनहारी।
कई योजन तक होवे ऐसा, अतिशय अद्भुत भारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।33।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरु परिणाम भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी पृथ्वी दर्पण तल, सम होवे शुभकारी।
प्रभु के विहरण हेतु रचना, करें देवगण सारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।34।।

ॐ ह्रीं आदर्शतल प्रतिमा रत्नमही देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार देव विक्रिया कर, शीतल पवन चलावें।
हो अनुकूल वायु विहार में, ये अतिशय प्रगटावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।35।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमानन्द प्राप्त कर प्राणी, जिन प्रभु के गुण गाते।
भय संकट क्लेशादि रोग सब, मन में नहीं सताते।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।36।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सुखद वायु चलने से धूलि, कंटक न रह पावें।
प्रभु विहार के समय देवगण, भूमि स्वच्छ बनावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।37।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित धूलि कंटकादि भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघ कुमार करें नित वृष्टि, गंधोदक की भाई।
इन्द्रराज की आज्ञा से हो, यह प्रभु की प्रभुताई।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।38।।

ॐ ह्रीं मेघकुमारकृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ण कमल की रचना, सुरगण श्री विहार में करते।
प्रभु विहार के समय देवगण, भूमि स्वच्छ बनावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।39।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तलरचित स्वर्ण कमल देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु विधि धान्य सभी ऋतुओं के, फलने से झुक जाते।
देवों कृत अतिशय यह सुन्दर, सबको सुखी बनाते।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।40।।

ॐ ह्रीं सर्वऋतुफल देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

शरद ऋतु सम स्वच्छ सुनिर्मल, गगन होय मनहारी।
उल्कापात धूम्र आदि से, रहित होय शुभकारी।।

अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।41।।

ॐ ह्रीं शरदकाल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शरद मेघ सम सर्व दिशाएँ, होवें जन मनहारी।
रोगादि पीड़ाएँ हरते, देव सभी की सारी।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।42।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय-जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्निकाय के देव शीघ्र ही, प्रभु भक्ति को आओ।
इन्द्राज्ञा से देव बुलाते, आकर प्रभु गुण गाओ।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।43।।

ॐ ह्रीं परापराह्वान देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धर्मचक्र ले यक्ष इन्द्र शुभ, आगे-आगे जावें।
चार दिशा में दिव्य चक्र ले, मानो प्रभु गुण गावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर भक्ति भाव से, श्री जिन के गुण गाएँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके हम भी, रत्नत्रय निधि पाएँ।।44।।

ॐ ह्रीं धर्मचक्रचतुष्टय भाषा देवोपनीतातिशय धारक श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

अनंत चतुष्टय

जिनवर अनन्त गुण पाए, प्रभु लोकालोक दर्शाए।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।45।।

ॐ ह्रीं अनंतदर्शन गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ज्ञानावरणी नाशे, फिर केवल ज्ञान प्रकाशे।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।46।।

ॐ ह्रीं अनंतज्ञान गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोहकर्म के नाशी, जिनवर अनन्त सुखराशी।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।47।।

ॐ ह्रीं अनंतसुख गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न अन्तराय रह पावे, प्रभु वीर्यानन्त प्रगटावें।
हम जिनवर के गुण गाएँ, पद सादर शीश झुकाएँ।।48।।

ॐ ह्रीं अनंतवीर्य गुणप्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट प्रातिहार्य *(सोरठा)*

तरु अशोक सुखदाय, शोक निवारी जानिए।
प्रातिहार्य कहलाय, समवशरण की सभा में।।49।।

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ सिंहासन होय, रत्न जड़ित सुंदर दिखे।
अधर तिष्ठते सोय, उदयाचल सों छवि दिखे।।50।।

ॐ ह्रीं सिंहासनमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पवृष्टि शुभ होय, भांति-भांति के कुसुम से।
महा भक्तिवश सोय, मिलकर करते देव गण।।51।।

ॐ ह्रीं सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि सुखकार, सुने पाप क्षय हो भला।
पावैं सौख्य अपार, सुर नर पशु सब जगत के।।52।।

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ चंवर ढुरांय, प्रभु के आगे देवगण।
भक्ति सहित गुण गाय, अतिशय महिमा प्रकट हो।।53।।

ॐ ह्रीं चामरमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

सप्त सुभव दर्शाय, भामण्डल निज कांति से।
महा ज्योति प्रगटाय, कोटि सूर्य फीके पड़ें।।54।।

ॐ ह्रीं भामण्डलमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

देव दुंदुभि नाद, करें देव मिलकर सुखद।
करें नहीं उन्माद, समवशरण में जाय के।।55।।

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

जड़ित सुनग तिय छत्र, तीन लोक के प्रभु की।
दर्शाते सर्वत्र, महिमाशाली है कहा।।56।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रयमहाप्रातिहार्य श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धों के 8 गुण

मोह कर्म को नाशकर पाया सद् श्रद्धान।
समकित गुण को प्राप्तकर, किया आत्म उत्थान।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।57।।

ॐ ह्रीं समकितगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म का, होवे पूर्ण विनाश।
विशद ज्ञान का मम हृदय, अतिशय होय प्रकाश।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।58।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञानगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म दर्शनावर्ण का, कर देते जो घात।
दर्शन गुण वह जीव शुभ, कर लेते हैं प्राप्त।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।59।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शनगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म अन्तराय नाशकर, पाते वीर्य अनन्त।
अल्प समय में वह बनें, मुक्ति वधु के कन्त।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।60।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्यगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रकट होय सूक्ष्मत्व गुण, नाम कर्म हो नाश।
शीघ्र मोक्ष पद पायेगा, है पूरा विश्वास।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।61।।

ॐ ह्रीं सूक्ष्मत्वगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवगाहन गुण प्राप्त हो, आयु कर्म नश जाय।
चतुर्गति से मुक्त हो, मुक्ति वधु को पाय।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।62।।

ॐ ह्रीं अवगाहनगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगुरुलघु गुण प्रकट हो, गोत्र कर्म हो नाश।
ऊँच-नीच पद मैटकर, हो सिद्धों में वास।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।63।।

ॐ ह्रीं अगुरुलघुगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाएँ अव्याबाध गुण, वेदनीय हो नाश।
निराबाध सुख प्राप्त हो, हो शिवपुर में वास।।
अरहनाथ भगवान की, महिमा अपरम्पार।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, प्रभु पद बारम्बार।।64।।

ॐ ह्रीं अव्याबाधगुण सहिताय श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दश धर्मों को पाने वाले, जिनवर का करते गुणगान।।
छियालिस मूल गुणों के धारी, अरहनाथजी हुए महान्।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाने, करते तव पद में अर्चन।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाकर, करते हैं शत्-शत् वंदन।।65।।

ॐ ह्रीं चतुःषष्ठि गुण दशधर्म एवं अष्ट गुणयुक्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

New
2-2-2012

जाप–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा– अरहनाथ भगवान का, करते हम गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, पावें पद निर्वाण।।

(पद्धरि छन्द)

जय अरहनाथ अन्तर्यामी, जय जय त्रिभुवन के हे स्वामी।
अद्भुत महिमा तुमरी अपार, तव गुण का जग में नहीं पार।।
स्वर्गों से चय कर के जिनेश, प्रभु हस्तिनागपुर में विशेष।
तुम भूप सुदर्शन धन्य कीन, मित्रा माता उर जन्म लीन।।
फाल्गुन शुक्ला तृतीया प्रधान, प्रभु गर्भ प्राप्त कीन्हा महान।
दश अतिशय पाकर हे जिनेश, प्रभु जन्म लिया तुमने विशेष।।
मंगसिर शुक्ला चौदश विशेष, उस दिन को जन्मे श्री जिनेश।
तन का अवगाहन था महान, शुभ तीस धनुष जानो प्रधान।।
आयु थी अस्सी सहस वर्ष, तुमने पाया शुभ अतिहर्ष।
संसार वास जाना असार, पाना जो चाहा विभव पार।।
संयम को धारण कर जिनेश, प्रभु महाव्रतादिक धर विशेष।
मंगसिर शुक्ला दशमी प्रधान, सम्यक् तप धारे तव महान।।
मुनिवर की दीक्षा लिए धार, निर्ग्रन्थ भेष धारे अपार।
मछली लक्षण है चरण खास, जग जीव बने तव चरणदास।।
कार्तिक बदि बारस को सुजान, प्रभु ने पाया केवल्य ज्ञान।
तव देव राज शत चरण आन, प्रभु का कीन्हें शुभ सुयश गान।।
शुभ समवशरण रचना विशेष, करके हर्षाए सुर अशेष।
सुर नर पशु आए शरण आन, प्रभु पूजा करके किए ध्यान।।
करके चरणों में नमस्कार, गुण गा हर्षाए बार–बार।
शुभ कमलाशन बैठे जिनेश, तब दिव्य ध्वनि दीन्हें विशेष।।

गणधर ने पाए चार ज्ञान, जो दिव्य ध्वनि कीन्हें बखान।
श्रद्धान जगाए कई जीव, वह पुण्य उपाए शुभ अतीव।।
संयम भी धारे कई महान, फिर किए स्वयं ही आत्म ध्यान।
महिमा जिनवर की है अनूप, चरणों आ झुकते कई भूप।।
जिनके गुण का है नहीं पार, हम वन्दन करते बार–बार।
सम्मेद शिखर पहुँचे जिनेश, सारे जग में महिमा विशेष।।
शुभ चैत अमावश तिथि जान, जिनराज प्राप्त कीन्हें निर्वाण।
मम लगी चरण में प्रभु आस, हम भी पा जाएँ मुक्ति वास।।

दोहा– अरहनाथ प्रभु जी किए, अपने कर्म विनाश।
सिद्ध शिला पर पा लिया, जिनने अपना वास।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जिन पूजा कर पूज्य सब, बनते जीव महान।
सुर सुरेन्द्र बनकर 'विशद', पाते पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

अरहनाथ चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद नमन, करते योग सम्हार।
अरहनाथ के चरण में, वन्दन बारम्बार।।

चौपाई

अरहनाथ भगवान हमारे, भवि जीवों के तारण हारे।
तीन लोक में मंगलकारी, जो हैं जन–जन के उपकारी।।
उनकी महिमा हम भी गाते, पद में सादर शीश झुकाते।
स्वर्ग लोक से चयकर आये, नगर हस्तिनापुर शुभ गाए।।
पिता सुदर्शन जी कहलाए, मातश्री मित्रावति पाए।
फाल्गुन सुदी तीज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।।
देव स्वर्ग से चलकर आए, गर्भ कल्याणक श्रेष्ठ मनाए।
रत्नवृष्टि कीन्हें शुभकारी, नगर सजाए अतिशयकारी।।

अष्टकुमारिकाएँ भी आई, गर्भ का शोधन श्रेष्ठ कराईं।
मंगसिर सुदी चौदस को स्वामी, जन्म लिए मुक्तिपथ गामी।।
इन्द्र तभी ऐरावत लाया, मेरु गिरि पर न्हवन कराया।
मछली चिह्न प्रभु पद पाया, अरहनाथ तब नाम सुनाया।।
तीन धनुष तन की ऊँचाई, प्रभु ने अपनी देह की पाई।
अस्सी सहस वर्ष की स्वामी, आयु पाए अन्तर्यामी।।
बयालिस सहस वर्ष तक भाई, राज्य किए प्रभुजी सुखदायी।
मेघ विनाश देखकर स्वामी, हुई विरक्ति जग से नामी।।
रेवती नक्षत्र श्रेष्ठ सुखदायी, गये सहेतुक वन में भाई।
कुरुवंश के लाल कहाए, स्वर्ण वर्ण प्रभु तन का पाए।।
मंगसिर शुक्ल दशें शुभ जानो, शुभ नक्षत्र में प्रभुजी मानो।
केश लुंच कर दीक्षा धारी, हुए जहाँ से मुनि अविकारी।।
तृतिय भक्त प्रभु जी कीन्हें, आत्म ध्यान में चित्त जो दीन्हें।
अपराह्नकाल का समय बताया, प्रभु ने संयम को जब पाया।।
एक हजार मुनि शुभकारी, सह दीक्षित थे मंगलकारी।
सोलह दिन का समय बिताया, प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया।।
कार्तिक शुक्ला बारस जानो, अपराह्नकाल समय पहिचानो।
श्रेष्ठ सहेतुक वन शुभ गाया, रेवती नक्षत्र परम पद पाया।।
साढ़े तीन योजन का भाई, समवशरण था मंगलदायी।
आम्र वृक्ष सुरतरु शुभ गाया, कुबेर यक्ष प्रभु का बतलाया।।
यक्षी जया श्रेष्ठ शुभ गाई, गणधर तीस बताए भाई।
कुंभ प्रथम गणधर शुभ जानो, पचास हजार ऋषि पहिचानो।।
छह सो दश थे पूरबधारी, सोलह सो वादी शुभकारी।
अट्ठाइस सौ अवधिज्ञानी, अट्ठाइस सौ केवल ज्ञानी।।
पैंतिस सहस आठ सौ भाई, पैंतिस संख्या शिक्षक गाई।
तैंतालिस सौ विक्रियाधारी, छह हजार आर्यिका शुभकारी।।

साढ़े सत्रह सौ शुभ गाए, विपुल मति ज्ञानी कहलाए।
तीन लाख श्राविकाएँ जानो, एक लाख श्रावक पहिचानो।।
प्रभु सम्मेद शिखर जी आए, एक माह का ध्यान लगाए।
कृष्णा चैत अमावश भाई, रोहिणी नक्षत्र में मुक्ति पाई।।
आप हुए त्रय पद के धारी, कामदेव जिन चक्र के धारी।
जिला ललितपुर में शुभकारी, क्षेत्र नवागढ़ मंगलकारी।।
भू से प्रगट हुए जिन स्वामी, मंगलकारी शिवपद गामी।
उनके दर्शन जो भी पाए, 'विशद' स्वयं सौभाग्य जगाए।।

दोहा– 'विशद' भाव से जो पढ़े, चालीसा चालीस।
पावे सुख सौभाग्य वह, बने श्री का ईश।।

जाप–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री 1008 अरहनाथ भगवान की आरती

(तर्ज– शांति अपरम्पार है....)

अरहनाथ भगवान हैं, गुण अनंत की खान हैं।
तीन लोक में मेरे स्वामी, अतिशय हुए महान् हैं।। टेक
हस्तिनापुर में जन्म लिया है, अतिशय मंगल छाया जी।
पिता सुदर्शन मित्रा माता, को प्रभु धन्य बनाया जी।। अरहनाथ ....
अस्सी हजार वर्ष की आयु, श्री जिनवर ने पाई जी।
तीन धनुष शुभ मेरे प्रभु की, रही श्रेष्ठ ऊँचाई जी।। अरहनाथ ....
जन्मोत्सव पर अरहनाथ के, तीन लोक हर्षाया जी।
पाण्डुक शिला पे इन्द्रों ने शुभ, प्रभु का न्हवन कराया जी।। अरहनाथ ....
मछली चिह्न प्रभु का जानो, छियालिस गुण प्रगटाए जी।
गिरि सम्मेद शिखर से प्रभु जी, मुक्ति वधू को पाए जी।। अरहनाथ ....
'विशद' मोक्ष न पाया जब तक, प्रभु के गुण हम गाएँ जी।
भव–भव में हम शरण प्रभु की, जैनधर्म शुभ पाएँ जी।। अरहनाथ ....

प्रशस्ति

लोकालोक के मध्य में, मध्य लोक मनहार।
मध्य लोक के मध्य है, मेरु मंगलकार।।1।।
मेरु की दक्षिण दिशा, में शुभ क्षेत्र महान।
भरत क्षेत्र शुभ नाम है, अलग रही पहचान।।2।।
उत्तर में हिमवन गिरि, दक्षिण लवण समुद्र।
तिय नदियाँ जिसमें महा, अन्य कई हैं क्षुद्र।।3।।
मध्य रहा विजयार्द्ध शुभ, अतिशय अपरम्पार।
रहते हैं नर पशु जहाँ, श्रेष्ठ दिये शुभकार।।4।।
कर्म भूमि जो है परम, बना है धनुषाकार।
मंगलमय रचना बनी, जग में अपरम्पार।।5।।
वर्तमान अवसर्पिणी, में चौबीस जिनेश।
तीर्थंकर पद में हुए, धार दिगम्बर भेष।।6।।
कामदेव चक्री हुए, तीर्थंकर भी साथ।
अठारहवें तीर्थेश का, नाम है अरहनाथ।।7।।
अरहनाथ जिनवर कहे, तीनों लोक प्रसिद्ध।
अष्ट कर्म को नाशकर, आप हुए हैं सिद्ध।।8।।
सुख-शांति की चाह में, घूमें सारे जीव।
कर्मोदय से लोक में, पाते दुःख अतीव।।9।।
शांति जिनकी अर्चना, करें दुःखों का नाश।
जीवन मंगलमय बने, होवे आत्म प्रकाश।।10।।
पौष शुक्ल पाँचे तिथि, पच्चिस सौ अड़तीश।
रहा वीर निर्वाण शुभ, तारीख है उनतीस।।11।।
दिल्ली सूरज विहार में, कीन्हा शीत प्रवास।
लेखन करके ग्रंथ का, लिया यहाँ अवकाश।।12।।
लघु धी से जो कुछ लिखा, मानो यही प्रमाण।
सर्व गुणी जन दें 'विशद', हमको करुणा दान।।13।।
खास दास की आस यह, और न कोई अरदास।
संयम मय जीवन रहे, अन्तिम मुक्तिवास।।14।।

परम पूज्य 108 आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज की पूजन

पुण्य उदय से हे ! गुरुवर, दर्शन तेरे मिल पाते हैं।
श्री गुरुवर के दर्शन करके, हृदय कमल खिल जाते हैंङ्क
गुरु आराध्य हम आराधक, करते उर से अभिवादन।
मम् हृदय कमल में आ तिष्ठो, गुरु करते हैं हम आह्वाननङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सांसारिक भोगों में फँसकर, ये जीवन वृथा गंवाया है।
रागद्वेष की वैतरणी से, अब तक पार न पाया हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, निर्मल जल हम लाए हैं।
भव तापों का नाश करो, भव बंध काटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोध रूप अग्नि से अब तक, कष्ट बहुत ही पाये हैं।
कष्टों से छुटकारा पाने, गुरु चरणों में आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, चंदन घिसकर लाये हैं।
संसार ताप का नाश करो, भव बंध नशाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चारों गतियों में अनादि से, बार-बार भटकाये हैं।
अक्षय निधि को भूल रहे थे, उसको पाने आये हैंङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, अक्षय अक्षत लाये हैं।
अक्षय पद हो प्राप्त हमें, हम गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

काम बाण की महावेदना, सबको बहुत सताती है।
तृष्णा जितनी शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती हैङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, पुष्प सुगंधित लाये हैं।
काम बाण विध्वंश होय गुरु, पुष्प चढ़ाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

काल अनादि से हे गुरुवर ! क्षुधा से बहुत सताये हैं।
खाये बहु मिष्ठान जरा भी, तृप्त नहीं हो पाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, नैवेद्य सुसुन्दर लाये हैं।
क्षुधा शांत कर दो गुरु भव की ! क्षुधा मेटने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह तिमिर में फंसकर हमने, निज स्वरूप न पहिचाना।
विषय कषायों में रत रहकर, अंत रहा बस पछतानाङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, दीप जलाकर लाये हैं।
मोह अंध का नाश करो, मम् दीप जलाने आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अशुभ कर्म ने घेरा हमको, अब तक ऐसा माना था।
पाप कर्म तज पुण्य कर्म को, चाह रहा अपनाना थाङ्क

विशद सिंधु के श्री चरणों में, धूप जलाने आये हैं।
आठों कर्म नशाने हेतु, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपाड़ी, इत्यादि फल लाये हैं।
पूजन का फल प्राप्त हमें हो, तुमसा बनने आये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, भाँति-भाँति फल लाये हैं।
मुक्ति वधु की इच्छा करके, गुरु चरणों में आये हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर ! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैंङ्क
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैंङ्क

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **विशद सिंधु गुरुवर मेरे, वंदन करूँ त्रिकाल।**
मन-वन-तन से गुरु की, करते हैं जयमालङ्क

गुरुवर के गुण गाने को, अर्पित है जीवन के क्षण-क्षण।
श्रद्धा सुमन समर्पित हैं, हर्षायें धरती के कण-कणङ्क
छतरपुर के कुपी नगर में, गूँज उठी शहनाई थी।
श्री नाथूराम के घर में अनुपम, बजने लगी बधाई थीङ्क
बचपन में चंचल बालक के, शुभादर्श यूँ उमड़ पड़े।

ब्रह्मचर्य व्रत पाने हेतु, अपने घर से निकल पड़े॥
आठ फरवरी सन् छियानवे को, गुरुवर से संयम पाया।
मोक्ष ज्ञान अन्तर में जागा, मन मयूर अति हर्षाया॥
पद आचार्य प्रतिष्ठा का शुभ, दो हजार सन् पाँच रहा।
तेरह फरवरी बंसत पंचमी, बने गुरु आचार्य अहा।।
तुम हो कुंद-कुंद के कुन्दन, सारा जग कुन्दन करते।
निकल पड़े बस इसलिए, भवि जीवों की जड़ता हरते॥
मंद मधुर मुस्कान तुम्हारे, चेहरे पर बिखरी रहती।
तव वाणी अनुपम न्यारी है, करुणा की शुभ धारा बहती है॥
तुममें कोई मोहक मंत्र भरा, या कोई जादू टोना है।
है वेश दिगम्बर मनमोहक अरु, अतिशय रूप सलौना है॥
हैं शब्द नहीं गुण गाने को, गाना भी मेरा अन्जाना।
हम पूजन स्तुति क्या जाने, बस गुरु भक्ति में रम जाना॥
गुरु तुम्हें छोड़ न जाएँ कहीं, मन में ये फिर-फिरकर आता।
हम रहें चरण की शरण यहीं, मिल जाये इस जग की साता॥
सुख साता को पाकर समता से, सारी ममता का त्याग करें।
श्री देव-शास्त्र-गुरु के चरणों में, मन-वच-तन अनुराग करें॥
गुरु गुण गाएँ गुण को पाने, औ सर्वदोष का नाश करें।
हम विशद ज्ञान को प्राप्त करें, औ सिद्ध शिला पर वास करें॥

ॐ ह्रीं 1०8 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरु की महिमा अगम है, कौन करे गुणगान।
मंद बुद्धि के बाल हम, कैसे करें बखान॥

इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

ब्र. आस्था दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्ज:- माई री माई मुंडेर पर तेरे बोल रहा कागा.....)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल गावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की.....2, महिमा कहीं न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के.....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला.....2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्.....4 मुनिवर के.....

धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी.....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के... जय...जय।।

रचयिता : श्रीमती इन्दुमती गुप्ता, श्योपुर